हम हैं किससे कम

सूर्यकुमार पांडेय

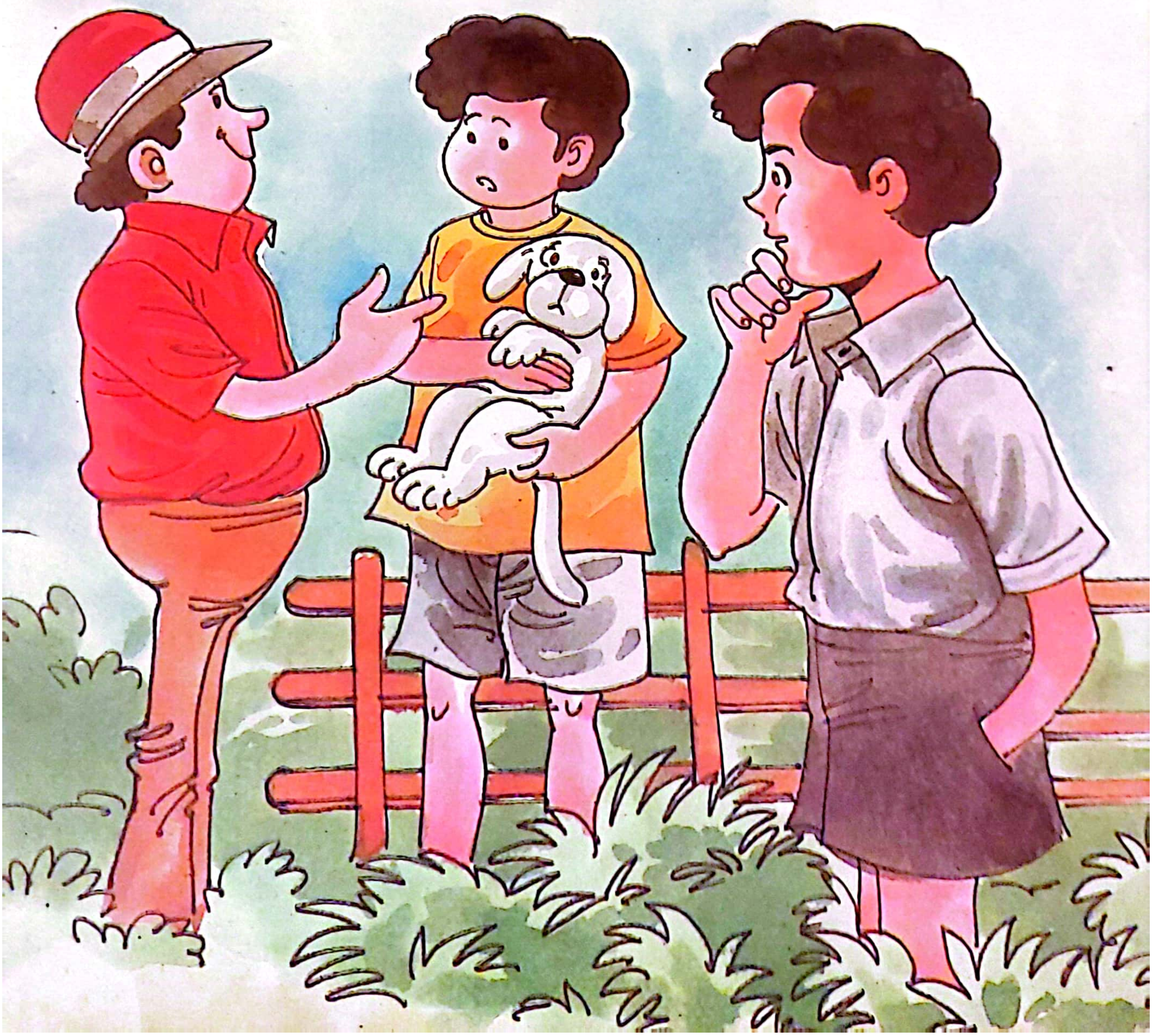

CamScanner

बच्चों के प्रिय कवि पुस्तक-माला

हम हैं किससे कम

सूर्यकुमार पांडेय

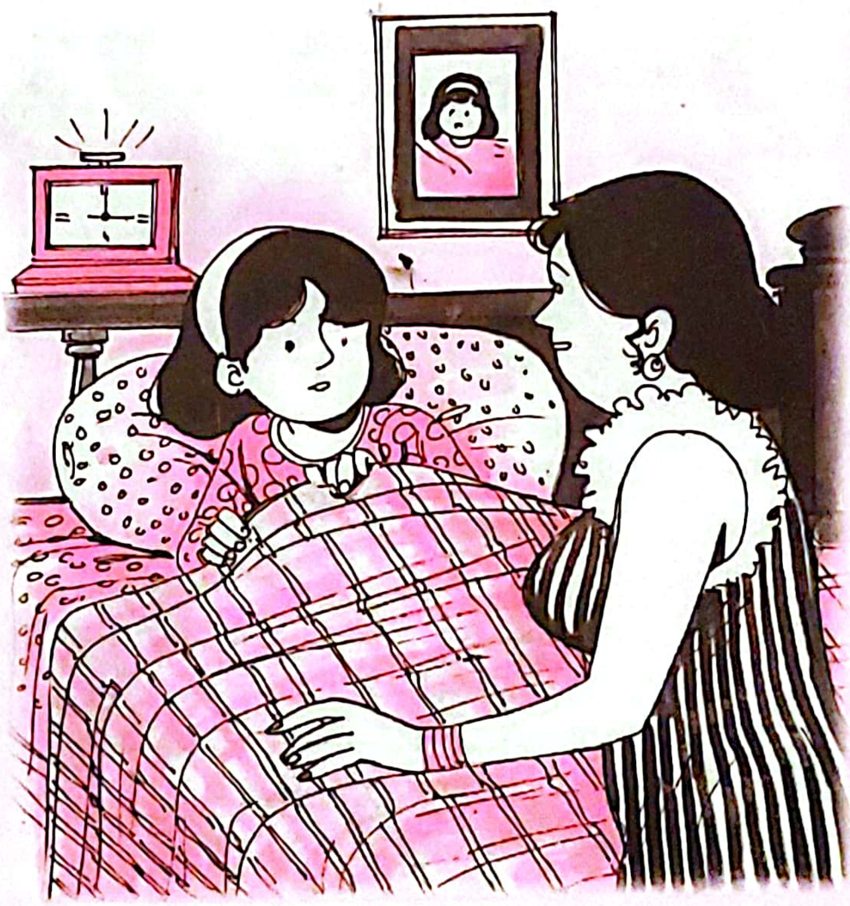

लेखकीय प्रति

सरला, दिल्ली

CamScanner

चयन-संपादन : प्रकाश मनु

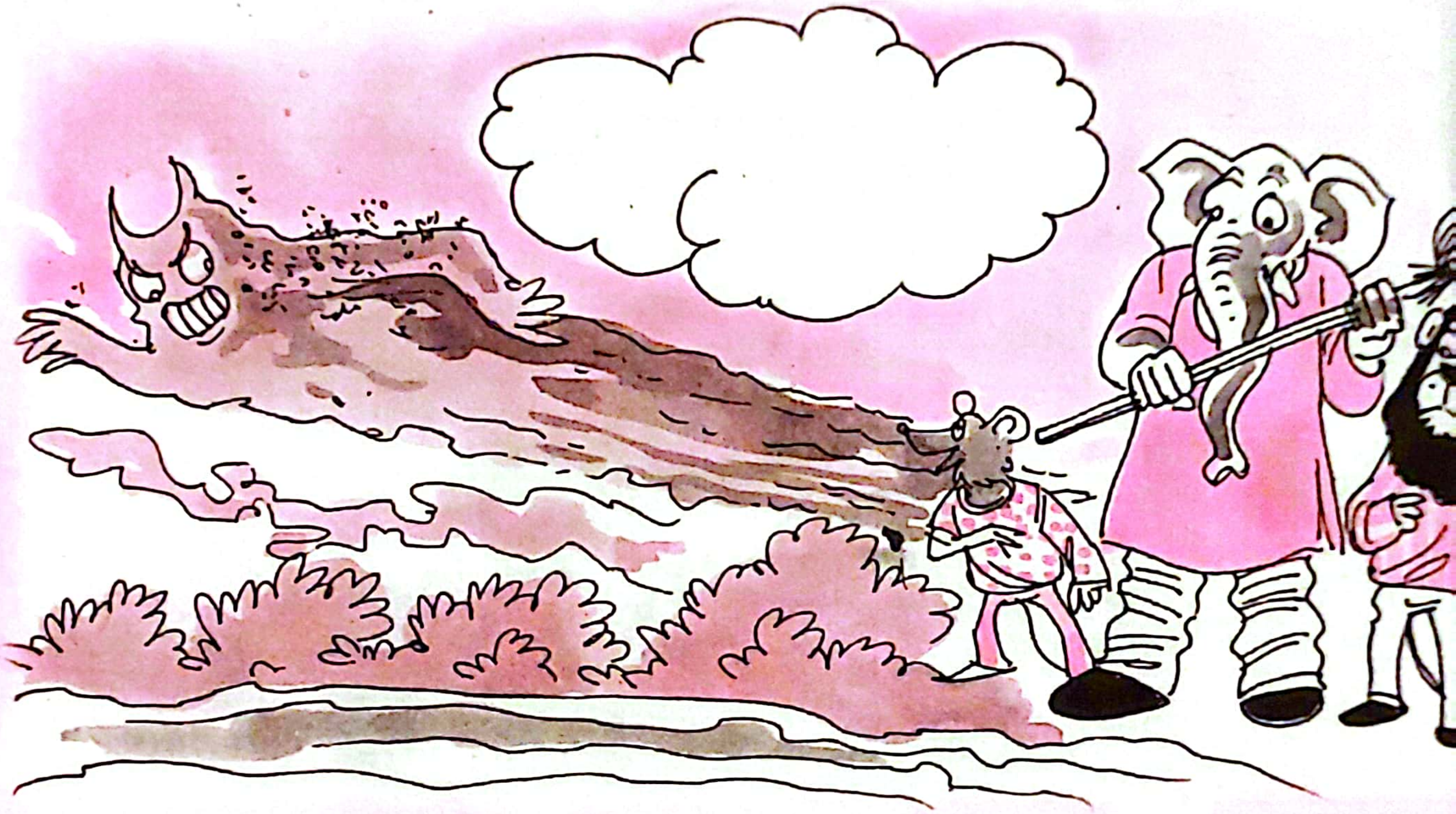

ISBN : 81-88911-41-0

मूल्य : बहत्तर रुपये (रु. 72.00)

प्रकाशक : सरला प्रकाशन
1586/1ई, नवीन शाहदरा
दिल्ली-110032

सर्वाधिकार : सूर्यकुमार पांडेय

संस्करण : प्रथम, 2008

टाइप सैटिंग एवं मुद्रण: रचना इंटरप्राइजिज, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

CS CamScanner

बच्चों के गाने-गुनगुनाने के लिए

सुंदर बाल कविताओं का यह गुलदस्ता

बच्चों को वे बाल कविताएँ अच्छी लगती हैं, जो उन्हें सहज ही रिझा लें... जिन्हें एक बार पढ़ते या सुनते ही, उनके होंठ गाने-गुनगुनाने के लिए फड़क उठें। लेकिन बच्चों को ऐसी बाल कविताएँ मिलें कहाँ? और सचमुच अच्छी बाल कविता कौन-सी है, यह पता कैसे चले? इसके लिए तो हिंदी के एक बड़े प्रसिद्ध बाल कवि कन्हैयालाल मत्त ने अनोखी बात कही है कि अच्छी बाल कविता वह है, जिसे पढ़कर बच्चे के मन की कली खिल जाए। छोटी-सी बात, पर कितना गहरा अर्थ है इसमें। इसे पढ़कर समझ में आता है कि बच्चों के लिए जो ढेरों नीरस, रूखा-सूखा उपदेशात्मक बालसाहित्य लिखा जा रहा है, वह असल में बालसाहित्य नहीं है। बच्चों का मन उससे परे भागता है और वे ऐसी रसपूर्ण कविताओं की खोज में रहते हैं, जिनमें सचमुच उनके मन की बात कही गई हो या कि जिनमें उनके भीतर के सपने, सुख-दुख, शिकवे-शिकायतें, मुश्किलें और नया कुछ कर गुजरने की ललक को आकार मिले।

इस लिहाज से बालसाहित्य में एक नए सपने' को साकार करने के लिए, 'बच्चों के प्रिय कवि' पुस्तक-माला प्रकाशित की जा रही है, जिसमें बच्चों के एक से एक बड़े और दिग्गज कवियों की चुनी हुई शानदार कविताओं को बच्चे एक जगह पढ़ सकें। **कन्हैयालाल मत्त, शेरजंग गर्ग, सूर्यकुमार पांडेय, देवेन्द्रकुमार, रमेश तैलंग, योगेन्द्रदत्त शर्मा, प्रकाश मनु** समेत हिंदी के कई चर्चित बाल कवियों की एक से एक सुंदर कविताएं बच्चे इस पुस्तक-माला में पढ़ेंगे। कुल मिलाकर हिंदी बाल कविता में जो सर्वश्रेष्ठ है, उसे सामने लाने की यह एक महत्त्वाकांक्षी, बड़ी योजना है। हिंदी बालसाहित्य में अपने ढंग की इस अनोखी पुस्तक-माला के चयन और संपादन का जिम्मा सँभाला है बच्चों के प्रिय कवि-कथाकार और बाल साहित्य के सुप्रसिद्ध आलोचक प्रकाश मनु ने।

'बच्चों के प्रिय कवि' पुस्तक-माला की इस कड़ी ***'हम हैं किससे कम'*** में पाठक अनोखी बाल कविताएँ लिखने वाले बच्चों के प्यारे कवि **सूर्यकुमार पांडेय** की कविताएँ पढ़ेंगे। ऐसी कविताएँ जिन्हें जितनी बार गाओ-गुनगुनाओं, उनमें से नए-नए अर्थ निकलते हैं और एक बार पढ़ते ही जो जो हमेशा के लिए याद हो जाती हैं।

—प्रकाशक

CamScanner

क्रम

कौन 5
मैं तितली हूँ 7
नये साल की प्रार्थना 8
नहीं डाँटें 9
बोर हो रहा हूँ मैं घर में 10
चिड़िया-सी धूप 11
काका-काकी ने देखी हॉकी 12
सबके अपने-अपने गुण हैं 13
बन जाएगा तू नेता 14
महँगाई के दौर में 15
आया अंधड़ 16
नाक 17
रात 18
चाँद 19
नेता चूहेनाथ 20
बस्ते में 21
गाँधी जी 22
हालत खस्ता 23
लू 24
बैठी है गरमी 25
दाढ़ी 26
अंकल जी 27
जाड़े की विदाई का गीत 28
बादल जी 29
आ गए बादल 30
रावण का नाम मिटेगा 31
मोटे सेठ 32
मामा जी की दाढ़ी 33
बाल 34
दाँत 35
शोर 36
काला धुआँ 37
चिड़िया कैसे गाएगी 39
आँधी आई 41
रामदीन 42
विकलांग बच्चों के गीत 43
अपना देश 45
हम उसको दोस्त बनाएँगे 47

CS CamScanner

कौन

रंग-बिरंगे चित्र बनाए
मैंने अपनी कापी में,
लेकिन तितली के पंखों पर
सुंदर चित्र बनाता कौन?

नीली स्याही से मैंने
दावात भरी यह नन्ही-सी,
लेकिन सागर में पानी
नीला-नीला भर जाता कौन?

मम्मी ने पहनाए मुझको
साफ-धुले उजले कपड़े,
लेकिन आसमान को
बादल के कपड़े पहनाता कौन?

पापा आते हैं स्कूटर से
अंकल पैदल आ जाते
लेकिन सुबह-सुबह गाड़ी से
सूरज को पहुँचाता कौन?

CamScanner

सुन अलार्म मम्मी उठती हैं
दीदी रोज जगाने पर,
लेकिन नन्ही गौरैया को
आकर सुबह जगाता कौन?

CamScanner

मैं तितली हूँ

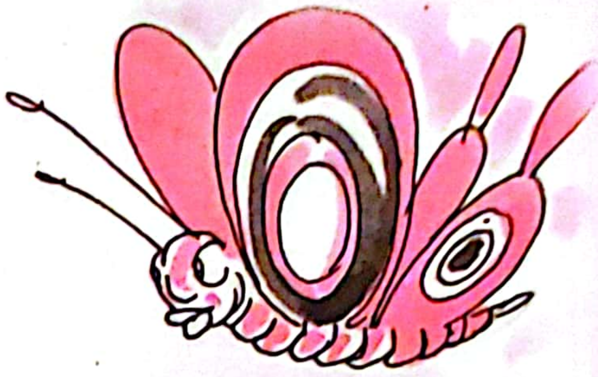

मैं उड़ी इधर, मैं उड़ी उधर,
मैं तितली हूँ, उड़ती दिन भर।

हर फूल मुझे रंगीन लगा
हर डाली मुझको प्यारी है,
जब भी मैं यहाँ-वहाँ उड़ती
तब संग-संग हँसती क्यारी है।
मैं उड़ी कल्पना के नभ में—
अपने सतरंगे पंखों पर।

मैं यहाँ गई, मैं वहाँ गई
लेकर पराग घर आई हूँ,
मैं सबको अच्छी लगती हूँ
मैं सबके मन को भाई हूँ।
मैं सुंदर सपने देख रही—
इन पंखुड़ियों के बिस्तर पर।

CamScanner

नये साल की प्रार्थना

घर-घर आया है नया साल,
खुशियाँ लाया है नया साल।

इस नये साल में हे ईश्वर!
तुम देना मुझको ऐसा वर,
मैं बन जाऊँ ज्यों कंप्यूटर,
हल करूँ फटाफट हर सवाल।

इस नये साल में हे प्रभुवर!
तुम देना मुझको ऐसा स्वर,
मैं बनूँ एक नामी सिंगर,
हो मधुर कंठ, सुर-राग-ताल।

इस नये साल में हे ईश्वर!
तुम देना मुझको ऐसा घर,
जिसमें मिठाइयाँ हों जी भर,
हों पकवानों से भरे थाल।

इस नये साल में हे प्रभुवर!
तुम देना मुझको नन्हे पर,
मैं उड़ूँ हवाओं में दिन भर,
फिर चहकूँ-फुदकूँ डाल-डाल।

CamScanner

नहीं डाँटें

बात जब हो नहीं सही, डाँटें,
देखें गलती जहाँ, वहीं डाँटें।
घर में आए हों दोस्त जब मेरे,
कम-से-कम आप तब नहीं डाँटें।
राह चलते, दुकान पर, घर में,
है न अच्छा कि हर कहीं डाँटें।
आप के बाद मैं हुआ पैदा,
गलती मुझसे हुई यही, डाँटें।
गलतियाँ आप भी तो करते हैं,
मुझसे भी हो रहीं, नहीं डाँटें।

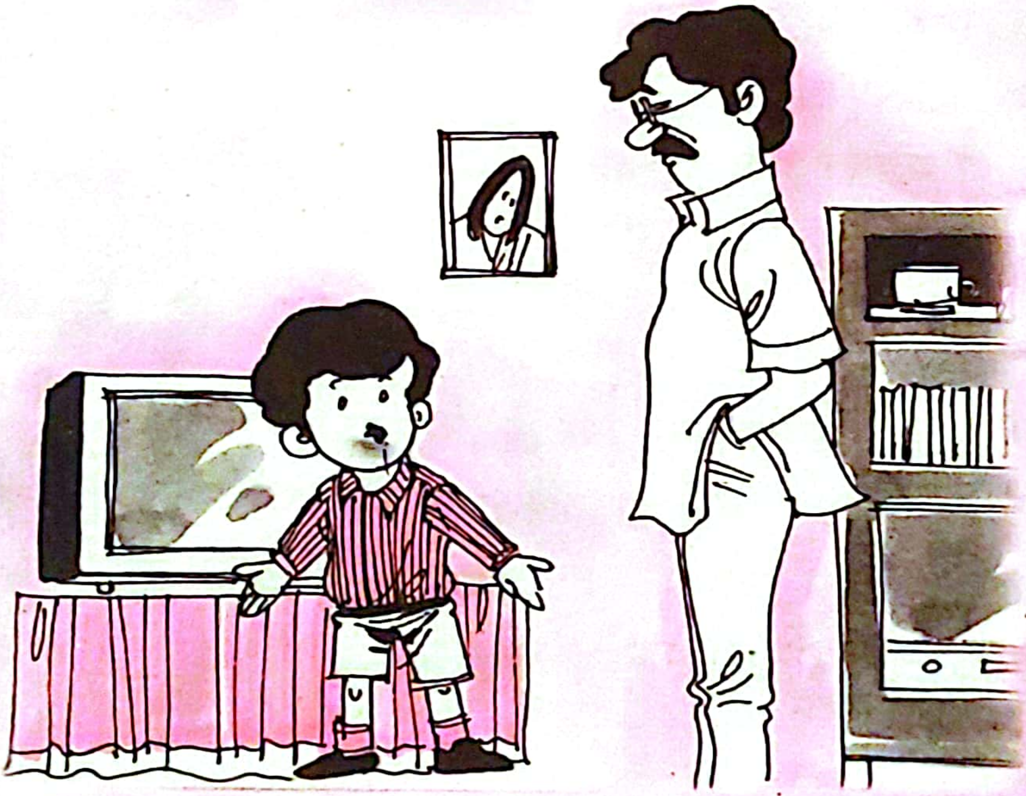

बोर हो रहा हूँ मैं घर में

बोर हो रहा हूँ मैं घर में,
बोर हो रहा हूँ मैं घर में!

पापा चले गए हैं दफ्तर,
मम्मी गई सहेली के घर।
दीदी-भैया स्कूल गए हैं,
बोर हो रहा हूँ मैं घर में।

गपशप है दादा की खूबी,
दादी जी पूजा में डूबीं।
सब ही मुझको भूल गए हैं,
बोर हो रहा हूँ मैं घर में।

हे भगवान, करो कुछ ऐसा,
मुझे बना दो अंकल जैसा।
मैं भी घूमूँ नए शहर में,
बोर हो रहा हूँ मैं घर में।

CamScanner

चिड़िया-सी धूप

सुबह खिली बढ़िया-सी धूप।

आई बैठी दरवज्जे पर,
उछली, पहुँच गई छज्जे पर,
यह नन्ही चिड़िया-सी धूप।

पल में आ जाती धरती पर,
पल में हो जाती छू-मंतर,
जादू की पुड़िया-सी धूप।

लुढ़क रही कमरे के अंदर,
बैठी मस्ती से बिस्तर पर,
यह गुड्डा-गुड़िया-सी धूप।

कमरे से आँगन में आकर,
भाग गई खिड़की से बाहर,
ऐसी हड़बड़िया-सी धूप।

पीला रंग पेट में भरकर,
फूट गई धरती पर गिरकर,
मिट्टी की हँड़िया-सी धूप।

दीवारों के श्याम पटों पर,
जाने क्या लिखती है आकर,
मिट जाती खड़िया-सी धूप।

पके आम-से गालों वाली,
और पके बालों वाली,
लगती है बुढ़िया-सी धूप।

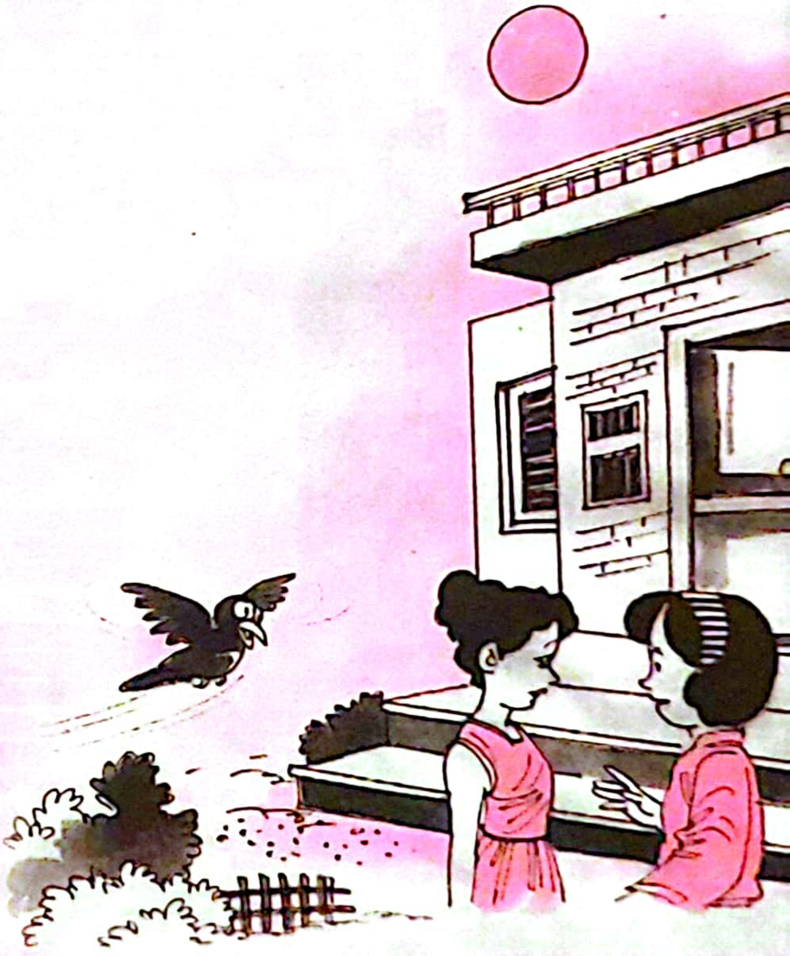

काका-काकी ने देखी हॉकी

हम भी देखेंगे अब हॉकी, घर से निकले काका-काकी।
लेकर संग में चाय, मिठाई, हलवा, पूरी और मलाई,
कपड़े पहने खाकी-खाकी, संग में नौकर चला बुलाकी।
हुआ भीड़ में धक्कम-धक्का, घुसकर बैठे कक्की-कक्का,
हम देखेंगे पहले हॉकी, सब करते थे ताका-झाँकी।
एक अगाड़ी, एक पिछाड़ी, दौड़ रहे थे सभी खिलाड़ी,
गेंद संग चलती थी हॉकी, दिखा रहे थे सब चालाकी।
हुआ गोल, तब उछले काका, छूटे पटाखे, धूम-धड़ाका,
आँख मूँदकर बैठीं काकी, मारे डर गिर पड़ा बुलाकी।
रुका खेल, मध्यांतर आया, नौकर से जलपान मँगाया,
खाते-पीते काका-काकी, चीज न कोई छोड़ी बाकी।
मैच हो गया ड्रा, इठलाते, लौटे काका, हँसते-गाते,
खुश थे काकी और बुलाकी, बड़े मजे की होती हॉकी।

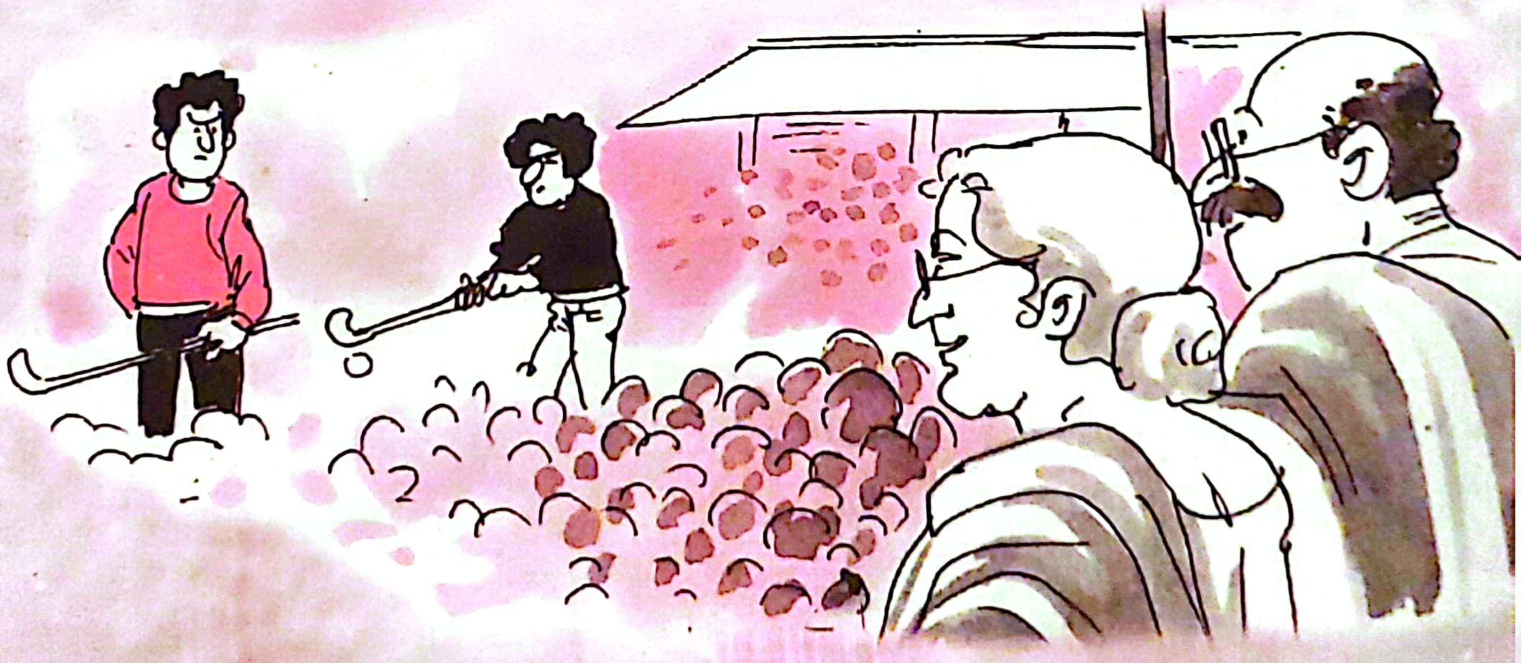

सबके अपने-अपने गुण हैं

हँसी उड़ाओ मत लंबू की
लंबा है तो इससे क्या!
भले देखने में बिजली का
खंभा है तो इससे क्या!

हँसी उड़ाओ मत छोटू की
छोटा है तो इससे क्या!
लंबाई का उसके तन में
टोटा है तो इससे क्या!

हँसी उड़ाओ मत मोटू की
मोटा है तो इससे क्या!
अधिक हेल्थ का उसके हिस्से
कोटा है तो इससे क्या!

हँसी उड़ाओ मत पतलू की
पतला है तो इससे क्या!
सींक-सलाई के जंगल से
निकला है तो इससे क्या!

लंबू - छोटू - मोटू - पतलू
सब अपने सहपाठी हैं,
सबके अपने-अपने गुण हैं
भले अलग कद-काठी हैं।

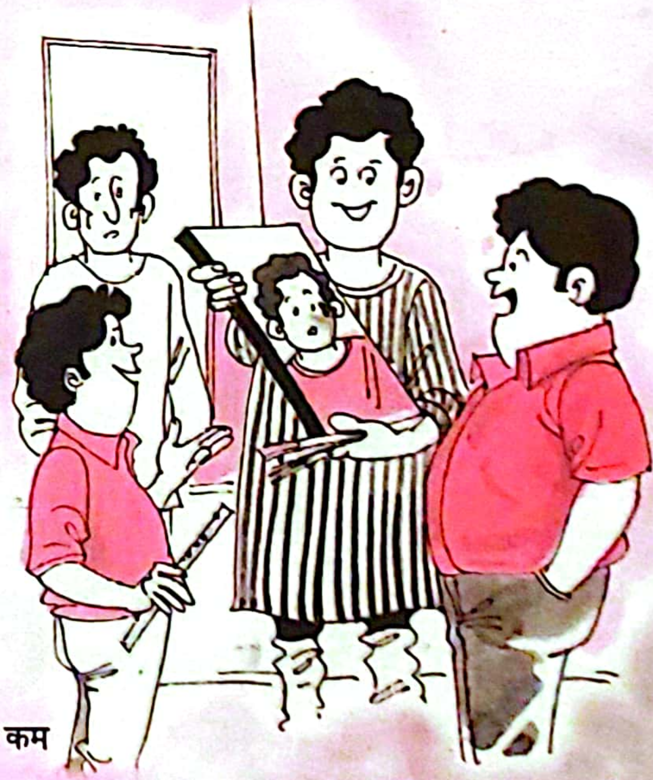

बन जाएगा तू नेता

बिल्ला बोला—'सुन री बिल्ली,
मैं तो चला, आज ही दिल्ली!'
बिल्ली बोली—'वहाँ न जा,
बन जाएगा तू नेता।
म्याऊँ-म्याऊँ छोड़ेगा,
भाषण देने दौड़ेगा।
फिर मंत्री-वंत्री बनकर,
तू जाएगा दौरे पर।
सौ-सौ चूहे खाएगा,
मेरी नाक कटाएगा।
तू घूमेगा चारों ओर,
मैं तो हो जाऊँगी बोर!

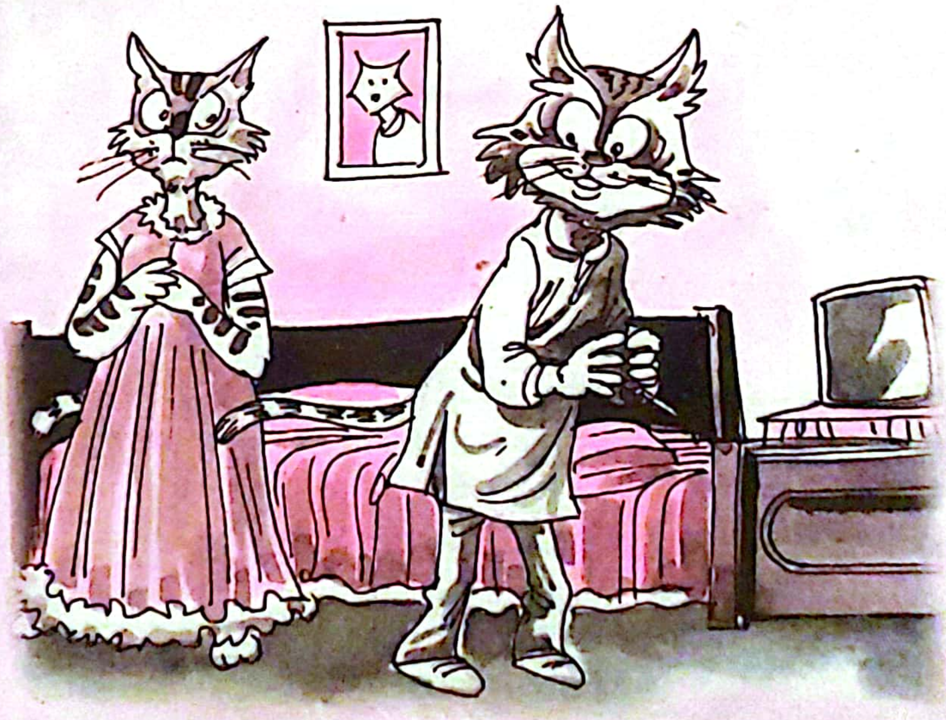

CamScanner

महँगाई के दौर में

दाना लेने चिड़िया निकली,
महँगाई के दौर में।

घर का राशन खत्म हो गया
खाना बहुत जरूरी है,
पेट पालना है बच्चों का
यह कैसी मजबूरी है?
जिस दूकान पर भी वह जाती,
चीजें सही नहीं मिल पातीं,
घोर मिलावट, सब कुछ नकली,
महँगाई के दौर में।

लंबी लाइन देख-देखकर
हिम्मत टूट गई उसकी,
थैली और अठन्नी दाबे,
वह तब चुपके से खिसकी।
सोच रही किस दर को जाऊँ,
सस्ते में राशन ले आऊँ,
मुश्किल में, है हालत पतली,
महँगाई के दौर में।

लेखकीय प्रति

आया अंधड़

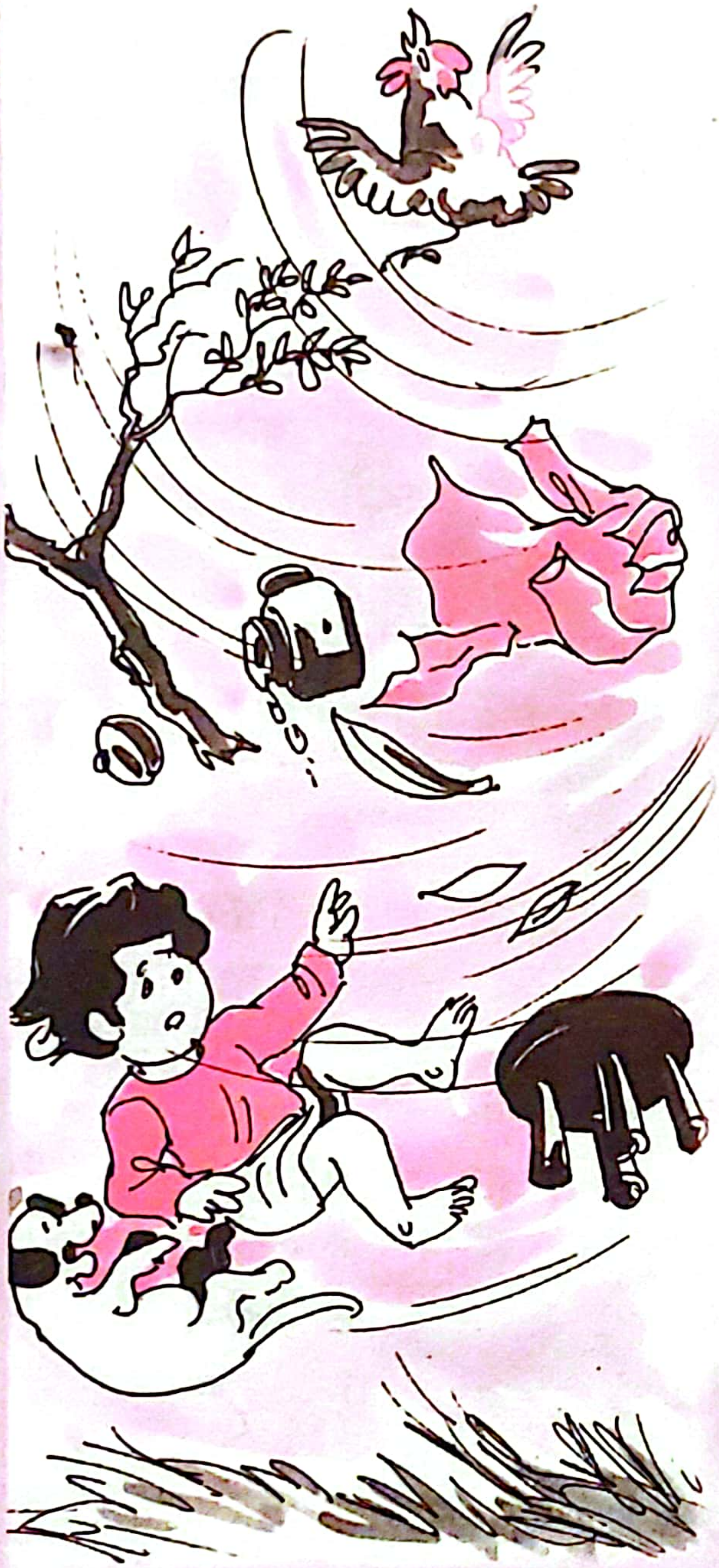

आया अंधड़, आया अंधड़,
हड़बड़-हड़बड़, आया अंधड़।
गिरी डालियाँ, उड़ते पत्ते,
उड़ती टोपी, कपड़े-लत्ते।
उड़ते बरतन तड़बड़-तड़बड़,
आया अंधड़, आया अंधड़।
गिरी केतली, ढक्कन भागा,
उलटा इक्का, लुढ़का ताँगा।
धम्म-धड़म-धड़, खड़बड़-खड़बड़,
आया अंधड़, आया अंधड़।
छप्पर-झुग्गी, महल-दुमहले,
आँधी से सबके दिल दहले।
धूल भरी, सब गड़बड़-गड़बड़,
आया अंधड़, आया अंधड़।

नाक

कुछ की लंबी, कुछ की छोटी,
कुछ की होती चौड़ी नाक।
कुछ की मोटी, कुछ की पतली,
कुछ की दिखे पकौड़ी नाक।
तोताराम नाम है जिनका,
उनकी चोंच सरीखी नाक।
बच्चे सारे शोर मचाते,
जब भी उनको दीखी नाक।
जो पढ़ने में पीछे रहते,
उनकी होती नीची नाक।
डर लगता है सूँड़ बनेगी,
अगर किसी ने खींची नाक।
करती रहती है जासूसी,
पकवानों की, घर में नाक।

काम बड़ा हो जिसका,
उसकी ऊँची दुनिया भर में नाक।
जिसने जिसकी इज्जत रख ली,
उसने उसकी रक्खी नाक
नहीं बैठने देती पल को,
अपने ऊपर मक्खी नाक।
सदा नाक की सीध चल रहे,
देखो इसकी सीधी नाक।
जब सोते तब बजने लगती,
खर्राटे की दीदी नाक।

CamScanner

रात

लगती बड़ी निराली रात,
कौए जैसी काली रात।
दूध नहीं डाला जिसमें,
एक चाय की प्याली रात।
झींगुर साज बजाते हैं,
गाती जब कव्वाली रात।
फल की तरह लदे तारे,
है बरगद की डाली रात।
दीये जले जिसमें ढेरों,
पूजा वाली थाली रात।
सोने की पुड़िया रखती,
खेल-तमाशों वाली रात।

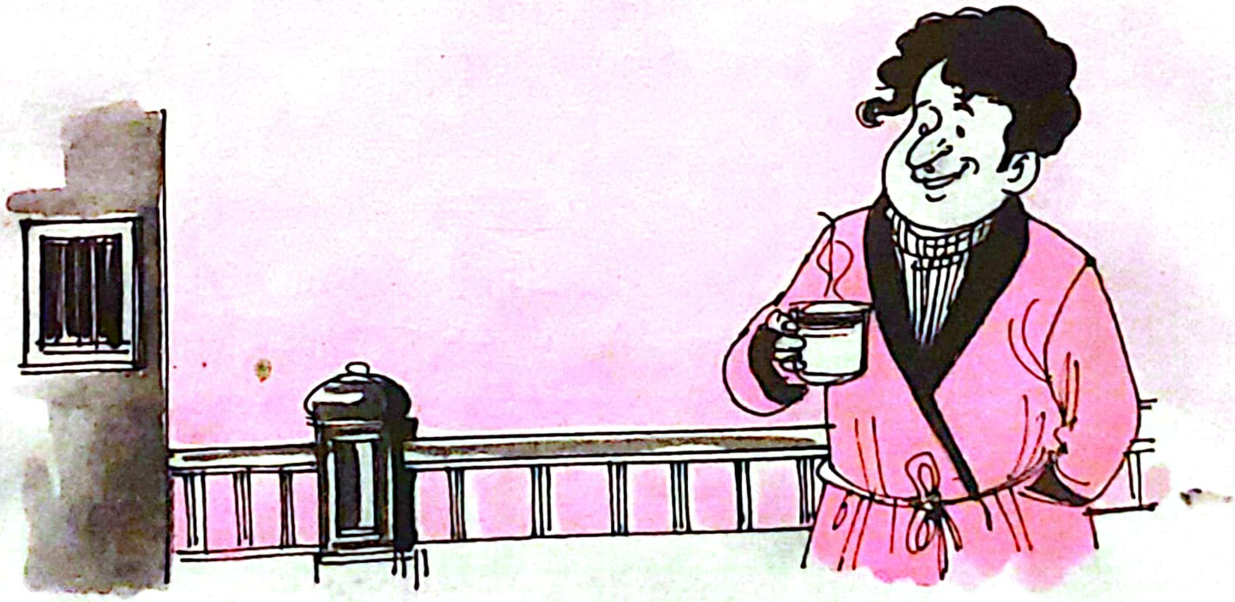

CamScanner

चाँद

देखो कितना गोरा चाँद,
आसमान का छोरा चाँद।
भीड़ जुट गई है तारों की,
जैसे एक ढिंढोरा चाँद।
भरा चाँदनी के शरबत से,
चाँदी जड़ा कटोरा चाँद।
सारी दुनिया सोने लगती,
लाता नींद-झकोरा चाँद।

करता नभ में ड्रामा चाँद,
हम बच्चों का मामा चाँद।
कभी दीखता दुबला-पतला,
बन जाता फिर मामा चाँद।
किरणों वाली शर्ट पहनता,
बादल का पाजामा चाँद।
चुपके से मुसकाता, करता,
नहीं कभी हंगामा चाँद।

CamScanner

नेता चूहेनाथ

सिर पर टोपी, छड़ी हाथ में,
दस चमचों के साथ,
वादे करते, वोट माँगते
नेता चूहेनाथ।
चिल्लाई जंगल की जनता—
बात कीजिए नोट,
चूहे जी, झूठे वादों से
नहीं मिलेंगे वोट!

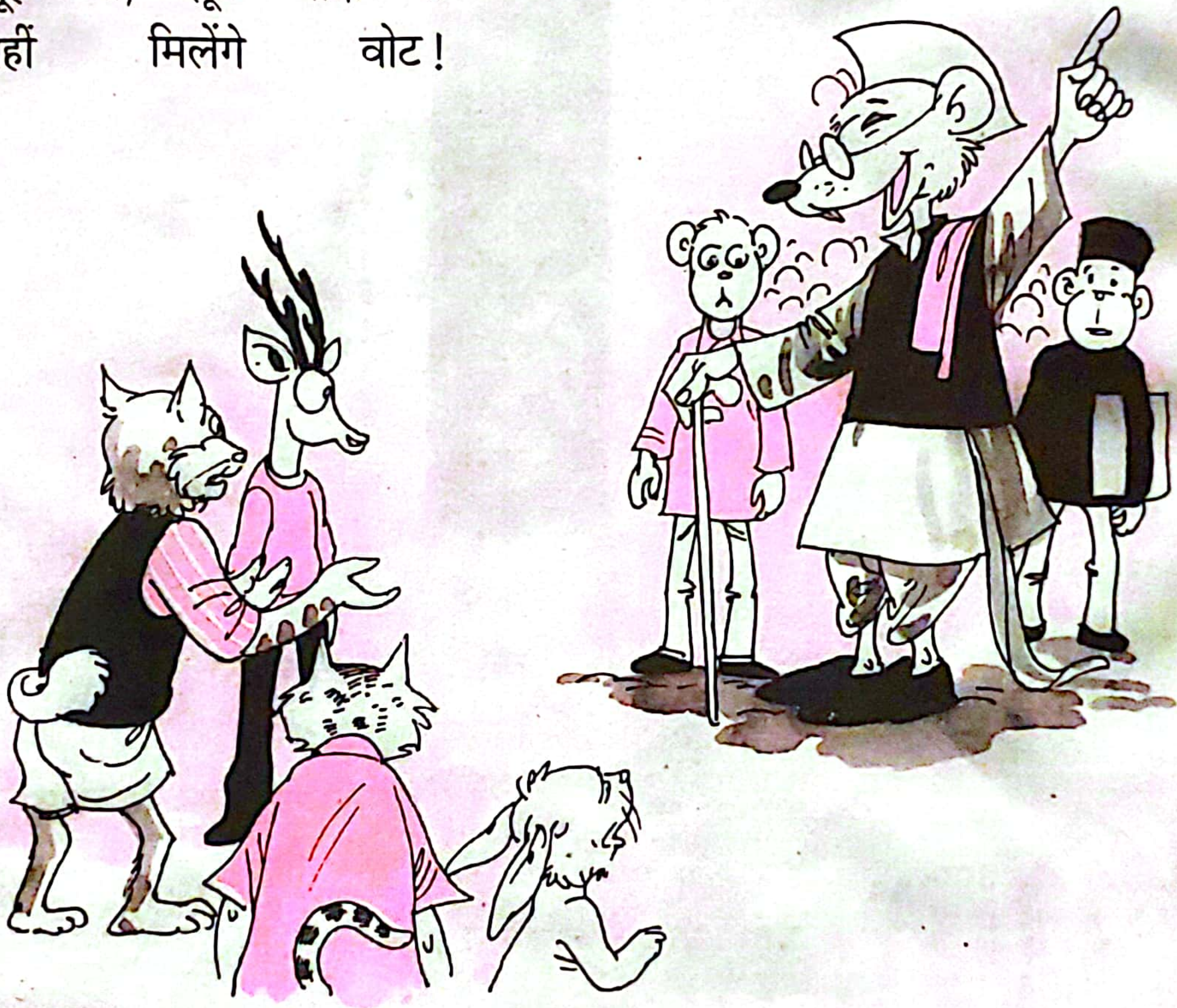

CamScanner

बस्ते में

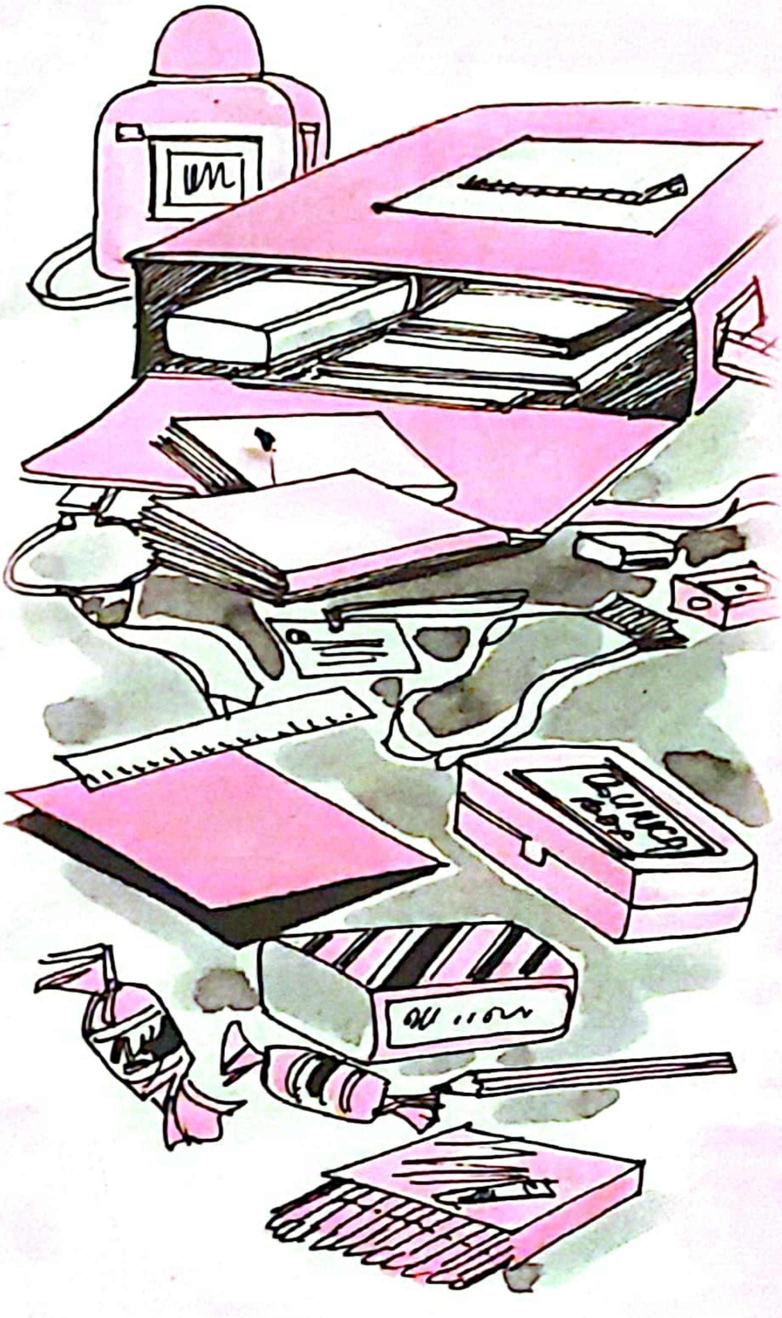

कॉपी, पेंसिल और किताबें
धरे हुए हैं बस्ते में,
टाई, मोनोग्राम, जुराबें
भरे हुए हैं बस्ते में।

रबर, कटर, रूलर, प्रोटेक्टर
धरे हुए हैं बस्ते में,
ग्रीटिंग काड्र्स, फ्रेंड्स के लेटर
भरे हुए हैं बस्ते में।

कॉमिक, फोटो, रफ कॉपी भी
रखी हुई हैं बस्ते में,
लंच बॉक्स, बिस्कुट, टॉफी भी
रखी हुई हैं बस्ते में।

अगड़म - बगड़म - सगड़म
दुनिया भर है मेरे बस्ते में,
सच पूछो तो एक,
अजायबघर है मेरे बस्ते में।

रोज लादकर इस बस्ते को
मैं विद्यालय जाता हूँ,
होमवर्क लादे कंधे पर
वापस घर को आता हूँ।

गाँधी जी

अगर आज गाँधी जी होते!

कदम-कदम पर झूठ देखकर,
जाति-धर्म की फूट देखकर,
नहीं एक पल भी वे सोते।
अगर आज गाँधी जी होते!

युद्ध अशांति, देश में झगड़े,
हिंसा, रंगभेद के लफड़े,
देख-देखकर नयन भिगोते।
अगर आज गाँधी जी होते!

बम, बंदूक, छुरे की भाषा,
उग्रवाद का देख तमाशा,
सत्य-न्याय के बिरवे बोते।
अगर आज गाँधी जी होते!

सत्याग्रह, अनशन के द्वारा,
करते वे कल्याण हमारा,
एक सूत्र में हमें पिरोते।
अगर आज गाँधी जी होते!

CamScanner

हालत खस्ता

टीचर जी, ओ टीचर जी
हालत मेरी खस्ता है,
केजी-टू में पढ़ती हूँ
टू केजी का बस्ता है।

चलूँ सड़क पर, रिक्शावाला
मुझे देखकर हँसता है,
एक सवारी और लाद लो
ताने मुझ पर कसता है।

बोझ किताबों का कम करिए
बड़ी दूर का रस्ता है,
नन्हे फूलों पर क्यों रक्खा
यह भारी गुलदस्ता है?

टीचर जी, ओ टीचर जी
हालत मेरी खस्ता है।

CamScanner

लू

सनन-सनन चलती है लू,
सबको ही खलती है लू।
तेज हवा की शैतानी,
सूरज की गलती है लू।
मूँग सभी की छाती पर,
गरमी में दलती है लू।
लाल कोयले-सी हर पल,
भट्ठी में जलती है लू।
पेड़-मकानों के तन पर,
गरम धूल मलती है लू।
गरमी से पलती है लू,
सबको ही छलती है लू।

CamScanner

बैठी है गरमी

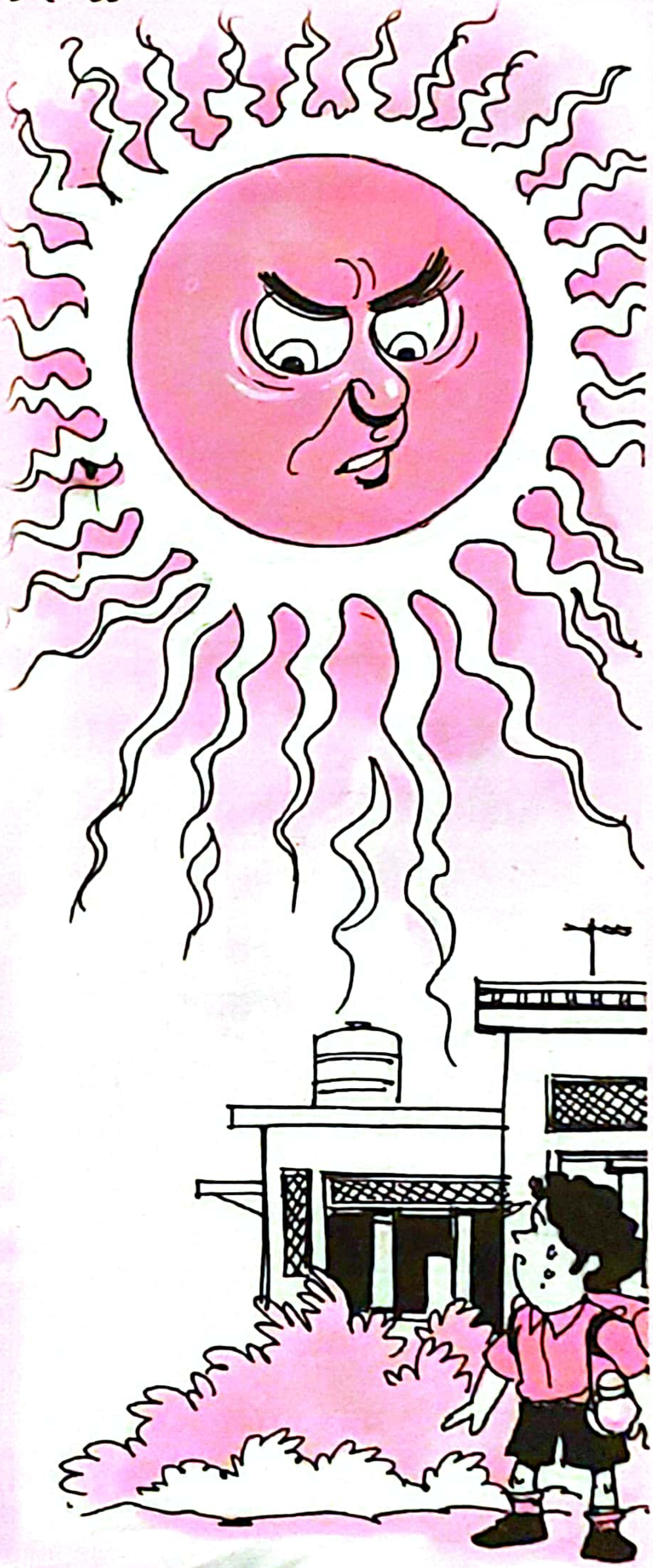

सूरज बाबा के कंधों पर,
बैठी है गरमी।
कहती—बाबा, मुझे घुमाओ,
शिमला-नैनीताल दिखाओ!
भर गिलास, लस्सी पिलवाओ,
कुल्फी-आइसक्रीम खिलाओ!
वरना परेशान कर दूँगी,
लू-लपटों से घर भर दूँगी।
लाख मनाते बाबा, लेकिन
ऐंठी है गरमी।

बाबा कहते—बिटिया रानी,
ठीक नहीं इतनी मनमानी!
जितना चाहो, पी लो पानी,
लेकिन अब छोड़ो शैतानी!
मत इतनी इतराओ-ऐंठो,
पंखे के नीचे जा बैठो।
बात मान बाबा की घर में
पैठी है गरमी।

दाढ़ी

उनकी दाढ़ी उजली-उजली
इनकी दाढ़ी है काली,
जिसकी दाढ़ी में तिनका हो
वह दाढ़ी चोरों वाली।
यह दाढ़ी है मुल्ला जी की
यह दाढ़ी है काजी की,
दाढ़ी संत बिनोवा की यह
यह दाढ़ी नेता जी की।
दाढ़ी अब्राहम लिंकन की
यह दाढ़ी है लेनिन की,
दाढ़ी यह कवि गुरु रवींद्र की
विश्वख्याति फैली जिनकी।
यह संता सिंह की दाढ़ी है
यह दाढ़ी है बागी की,
साधु और संतों की दाढ़ी
यह दाढ़ी बैरागी की।
तरह-तरह की दाढ़ी वाले
बालों की ढेरी दाढ़ी,
यह बकरे की दाढ़ी देखो
बच्चो, यह मेरी दाढ़ी।

CamScanner

अंकल जी

घर में आए खटर-पटर,
दाढ़ी वाले अंकल जी।

ऊँची एड़ी के जूते,
क्या कहने हैं इनकी चाल?
आँखों पर धूपी चश्मा,
सिर पर लंबे-लंबे बाल।

बातें करते गिटिर-पिटिर,
बड़े निराले अंकल जी।

फिल्म कौन-सी अच्छी है,
बदल रही किसकी सरकार?
कितने रन से टीम कौन-सी,
जीत रही है अबकी बार।

पापा से बतियाते दिन भर,
बैठे-ठाले अंकल जी।

CS CamScanner

जाड़े की विदाई का गीत

चलते-चलते जाड़ा बोला—
मैं जाता हूँ, बच्चो, टा-टा!

सुबह शाम तुम मेरे डर से,
नहीं निकल पाते थे घर से।
तनिक न डरना,
जी भर करना,
सैर-सपाटा।
मैं जाता हूँ, बच्चो, टा-टा!

पापा सदा टोक देते थे,
भैया तुम्हें रोक देते थे।
गए कहीं जब,
मम्मी ने तब,
तुमको डाँटा।
मैं जाता हूँ, बच्चो, टा-टा!

अगले साल लौट जाऊँगा,
स्वेटर-कोट साथ लाऊँगा।
जी भर दूँगा, फिर कर दूँगा,
पूरा घाटा।
मैं जाता हूँ, बच्चो, टा-टा!

CamScanner

बादल जी

नेताओं-सा रूप बदलते बादल जी,
सदा काफिले में ही चलते बादल जी।
जय-जयकार कर रहे मेढक स्वागत में,
है जुलूस के संग निकलते बादल जी।
दुखी देख धरती को आँसू टपकाते,
आँखों में भर नीर टहलते बादल जी।
आसमान में गरज-तरज कर चिल्लाते,
भाषण देते हुए उछलते बादल जी।
बिजली, पानी और हवा को संग लाते,
तन में मस्ती भरे मचलते बादल जी।
दल के दल आते हैं, कीचड़ भर जाते,
हर मौसम में हमको छलते बादल जी।

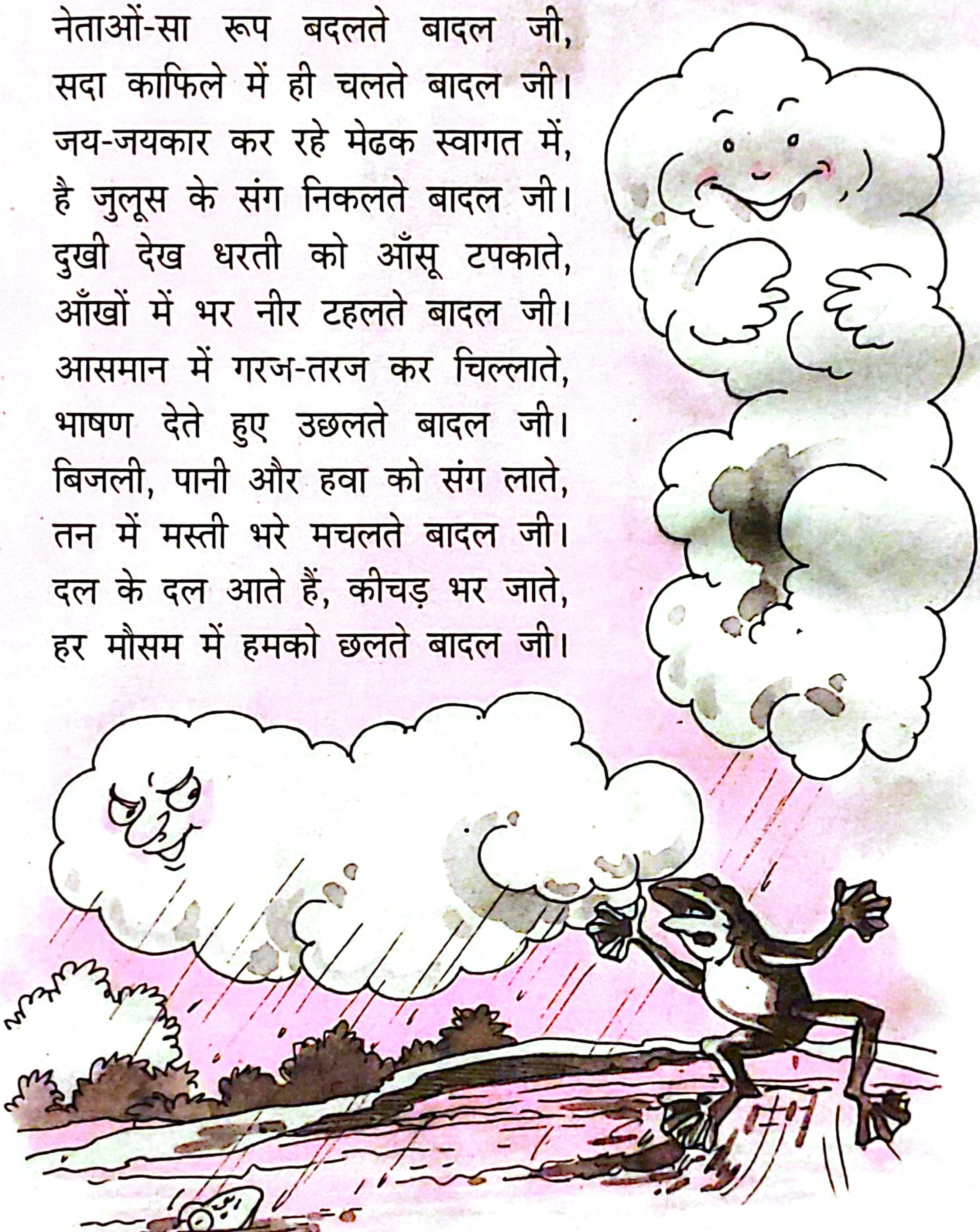

CamScanner

आ गए बादल

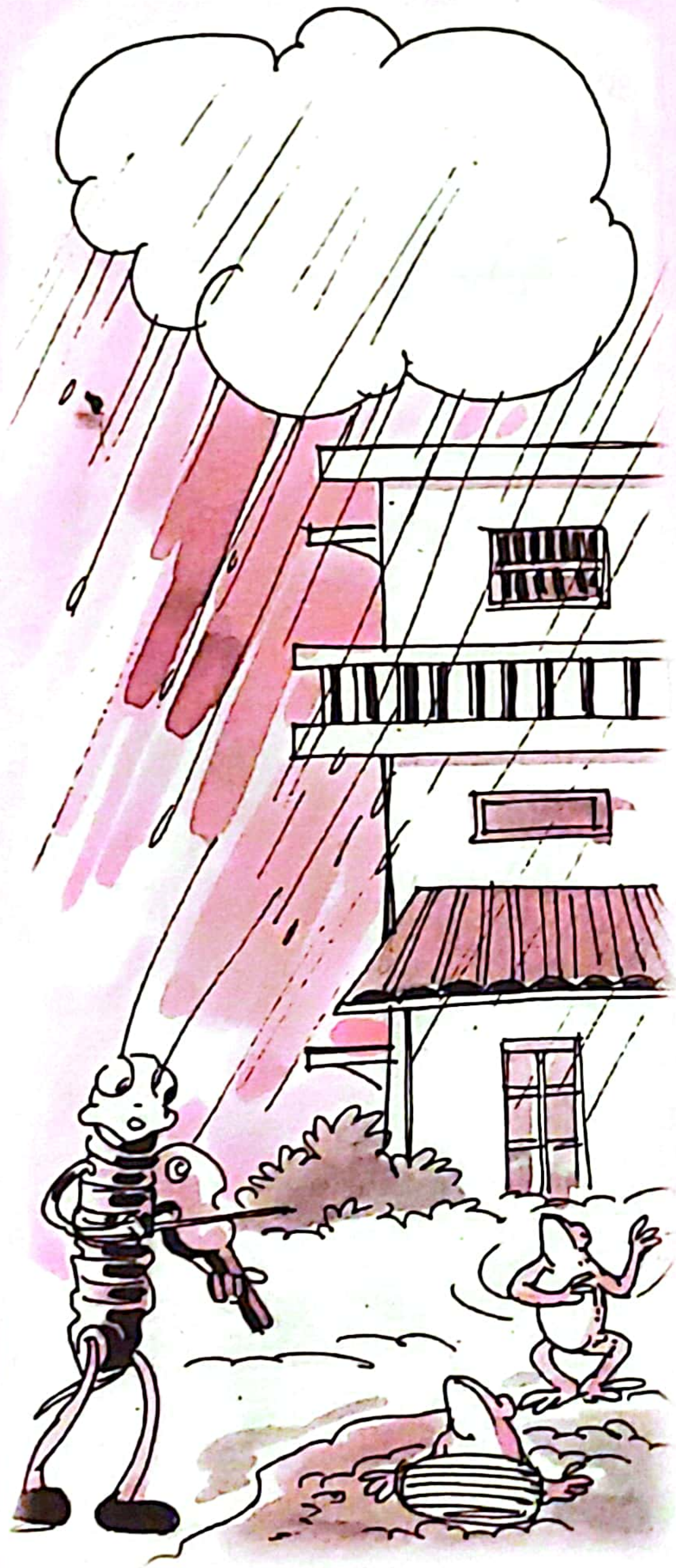

लगे झींगुर बजाने वॉयलिन,
लो आ गए बादल।

छतों पर गिर रहीं बूँदें
कि जैसे थाप तबलों की,
कि होता तिनक-ता-ता धिन
गगन में छा गए बादल।

छमाछम बरसता पानी
कि जैसे खनकती पायल,
फुहारों से भरे हैं दिन
सभी को भा गए बादल।

लगे हैं राग में गाने
सभी तालाब के मेढक,
भरे संगीत से पल-छिन
हमें बतला गए बादल।

CamScanner

रावण का नाम मिटेगा

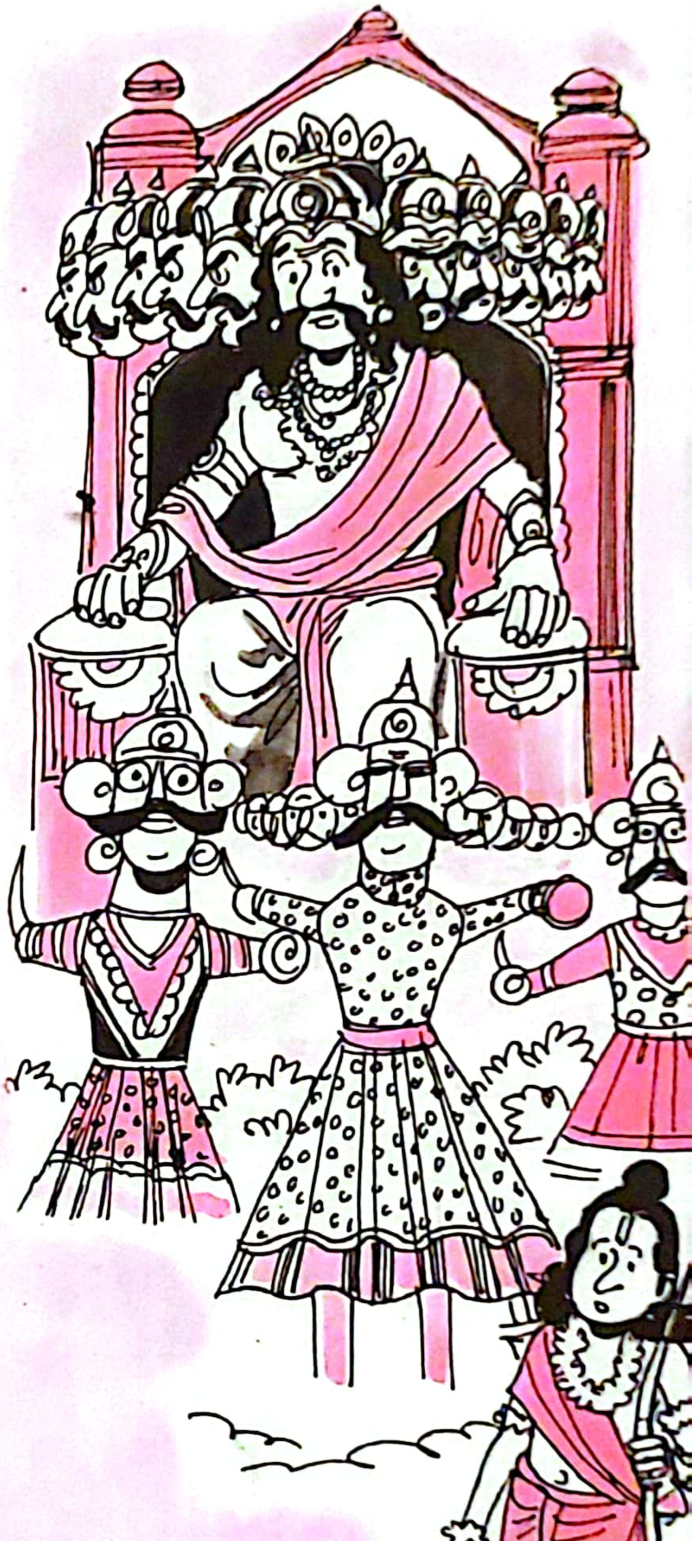

रावण हर साल जला है,
रावण हर साल जलेगा।

यह रावण महँगाई का,
यह रावण दंगाई का।
रावण भ्रष्टाचारों का,
झूठी कसमों, नारों का।
इसने हर साल छला है,
ऐसे कब तलक छलेगा?

यह रावण उत्पातों का,
राजा काली रातों का,
यह साथी दुख-दुविधा का,
यह दुश्मन सुख-सुविधा का।
यह पापों का पुतला है,
थोड़े दिन राज चलेगा।

तब कोई राम उठेगा,
सच का झंडा फहरेगा।
सच से फिर झूठ पिटेगा,
रावण का नाम मिटेगा।
युग-युग से यही चला है,
रावण फिर हाथ मलेगा।

CamScanner

मोटे सेठ

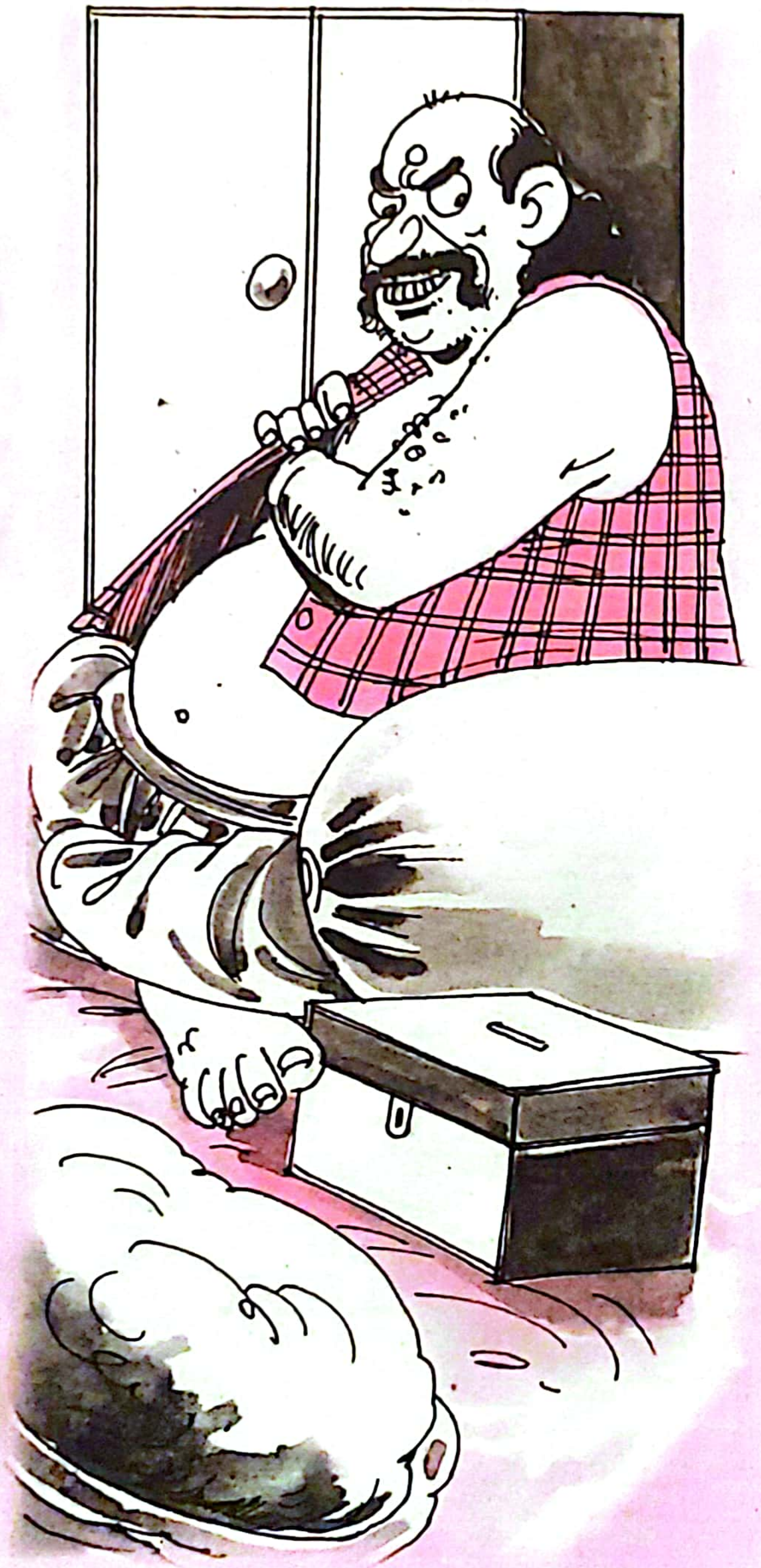

जमकर बैठे मोटे सेठ,
थल्लम-थल्लम उनका पेट।

सौदा लेने वालों का,
पैसा एक न छोड़ रहे।
चमड़ी से बढ़कर दमड़ी,
कौड़ी-कौड़ी जोड़ रहे।
ऊँचे हरदम रहते हैं,
इनकी सब चीजों के रेट।

पैसा लाला का ईश्वर,
पैसा ही इनका साथी।
बंद तिजोरी में सब कुछ,
फिर भी नींद नहीं आती।
लटका करती धरती तक
खनन-खनन-खन इनकी टेंट।

हाथी जैसे मोटे सेठ,
थल्लम-थल्लम इनका पेट।

CamScanner

मामा जी की दाढ़ी

कौए से भी ज्यादा काली
स्याही से भी गाढ़ी है,
गालों को ढककर बैठी
यह मामा जी की दाढ़ी है।

आधे उजले, आधे काले
बाल हो गए हैं खिचड़ी,
बे-तरतीब घने जंगल-सी
उगी हुई यह बहुत बड़ी।
सीधी-उलटी, दाएँ-बाएँ
कुछ तिरछी, कुछ आड़ी है।

जब भी गोदी में चढ़ता मैं
यह मुझको छू जाती है,
तब गुदगुदी बहुत मचती है
हँसी नहीं रुक पाती है।
सच मानो, यह दाढ़ी लगती
ज्यों काँटों की झाड़ी है।

बाल

कुछ के उजले, कुछ के भूरे, कुछ के होते काले बाल,
कुछ के सँवरे, कुछ के बिगड़े, कुछ के हैं घुँघराले बाल।
बाल-बाल बच गए फिसलकर, मोटी तोंद मुछंदर लाल,
चोट नहीं लग पाई सिर में, बचा ले गए उनको बाल।
नहीं धूप में मिली सफेदी, अनुभव वाले मुन्नूलाल,
ढूँढ़ लिया करते झटपट हल, हो पेंचीदा लाख सवाल।
बाल बिखेरे कल्लू आया, बाल बढ़ाए गिरिधर लाल,
बाल न बाँका होने पाए, उनको बता रहे हैं बाल।
नहीं बाल की खाल निकालो, बनो न कभी नाक के बाल,
बूढ़े-बड़े यही बतलाते, रहते इनसे दूर बवाल।
सिर पर चाँद नजर आती है, साफ हो गए सारे बाल,
अगर सभी गंजे पैदा हों, नाई हो जाएँ बेहाल।
बिना बाल की हो यदि दुनिया, जूँ का मिट जाए जंजाल,
तेल और कंघी की छुट्टी, अगर न हों बिलकुल ही बाल।

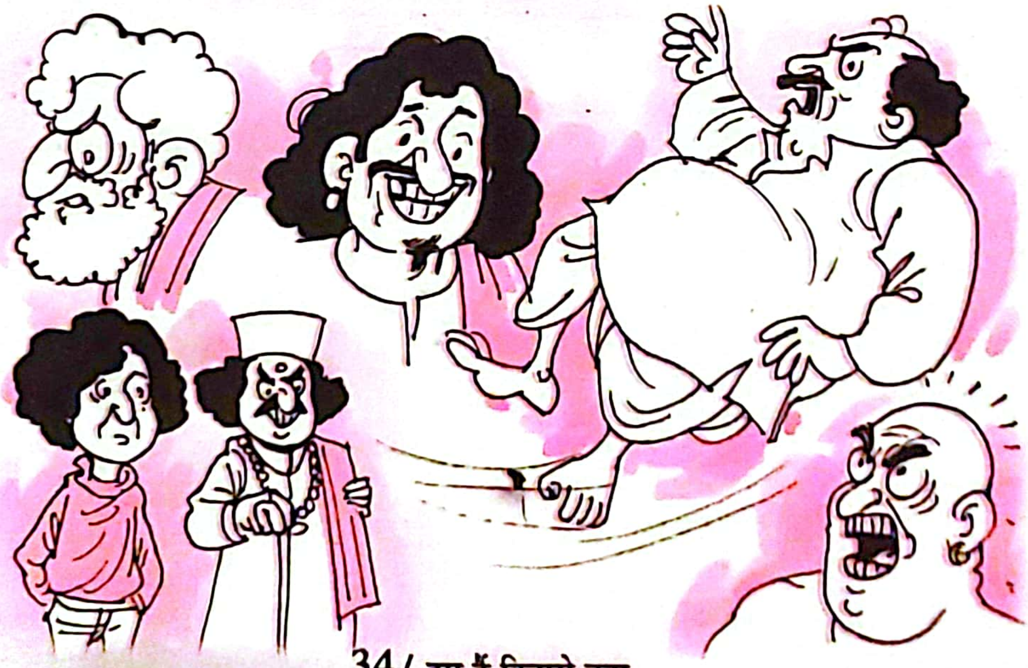

दाँत

घने किसी के, दूर किसी के, होते कुछ के छोटे दाँत,
कुछ के पतले, कुछ के चौड़े और किसी के मोटे दाँत।
तरह-तरह के आड़े-तिरछे, जाने कैसे-कैसे दाँत,
फिर भी साफ सदा रखते जो उनके मोती जैसे दाँत।
है पूरी बत्तीसी गायब, दादाजी के नकली दाँत,
दाँतों तले दबाते उँगली, होती जब अचरज की बात।
दाँत गड़ाना जिसने चाहा, झटपट हुए इकट्ठे दाँत,
छुड़ा दिए छक्के वीरों ने अब दुश्मन के खट्टे दाँत।
हाथी के मुँह में जमते हैं सच में, बड़े निराले दाँत,
खाने के हैं अलग, अलग इनके दिखलाने वाले दाँत।
गुस्से में जब हवलदार ने कसकर अपने पीसे दाँत,
दाँत दिखाकर माफी माँगी, पकड़ी गई चोर की जात।
एक-एक कर डब्बू जी के, टूटे सभी दूध के दाँत,
टेढ़े निकलेंगे या सीधे, परेशान रहते दिन-रात।

CamScanner

शोर

जिधर देखिए, उधर शोर है,
आज इसी का जोर-शोर है।

सड़कों पर वाहन का शोर,
मिल में है इंजन का शोर।
भीड़-भाड़, जन-जन का शोर,
शोर मचा है चारों ओर।

नहीं दीखता ओर-छोर है।
जिधर देखिए, उधर शोर है।

बना शोर सबका सरताज,
हुआ हवा पर इसका राज।
ऐसी गिरी शोर की गाज,
इससे बढ़ा प्रदूषण आज।

शहर-नगर हर कहीं जोर है,
जिधर देखिए, उधर शोर है।

चाहे रखें कान पर हाथ,
शोर छोड़ता मगर न साथ।
चाहे दिन हो, चाहे रात,
दिशा-दिशा में इसकी बात।

शोर-शराबा पोर-पोर है,
जिधर देखिए, उधर शोर है।

काला धुआँ

काला धुआँ गगन में फैला
खाँस रही है चील,
साँस नहीं मछली ले पाती
हुई विषैली झील।

मारे शोर, हो गया बहरा
वन का राजा शेर,
भरा हुआ है जंगल में
कूड़े-कचरे का ढेर।

जंगल बना रेत की बस्ती
भटक रहा है ऊँट,
हरियाली अब नहीं कहीं भी
पेड़ हो गए ठूँठ।

गीदड़, भालू, चीता सबको
तरह-तरह के रोग,
जंगल में मंगल कैसे हो
परेशान सब लोग।

CamScanner

हाथी जैसा मस्त जानवर
दीख रहा है पस्त,
पर्यावरण प्रदूषण से है
जंगल सारा ध्वस्त।

इस मुश्किल पर सब पशुओं ने
मिल कर किया विचार,
रखें स्वच्छ पर्यावरण सभी अब
बात हुई स्वीकार।

नया छिड़ा अभियान, सफाई
का यूँ ताबड़तोड़,
डरकर पर्यावरण प्रदूषण
भागा जंगल छोड़।

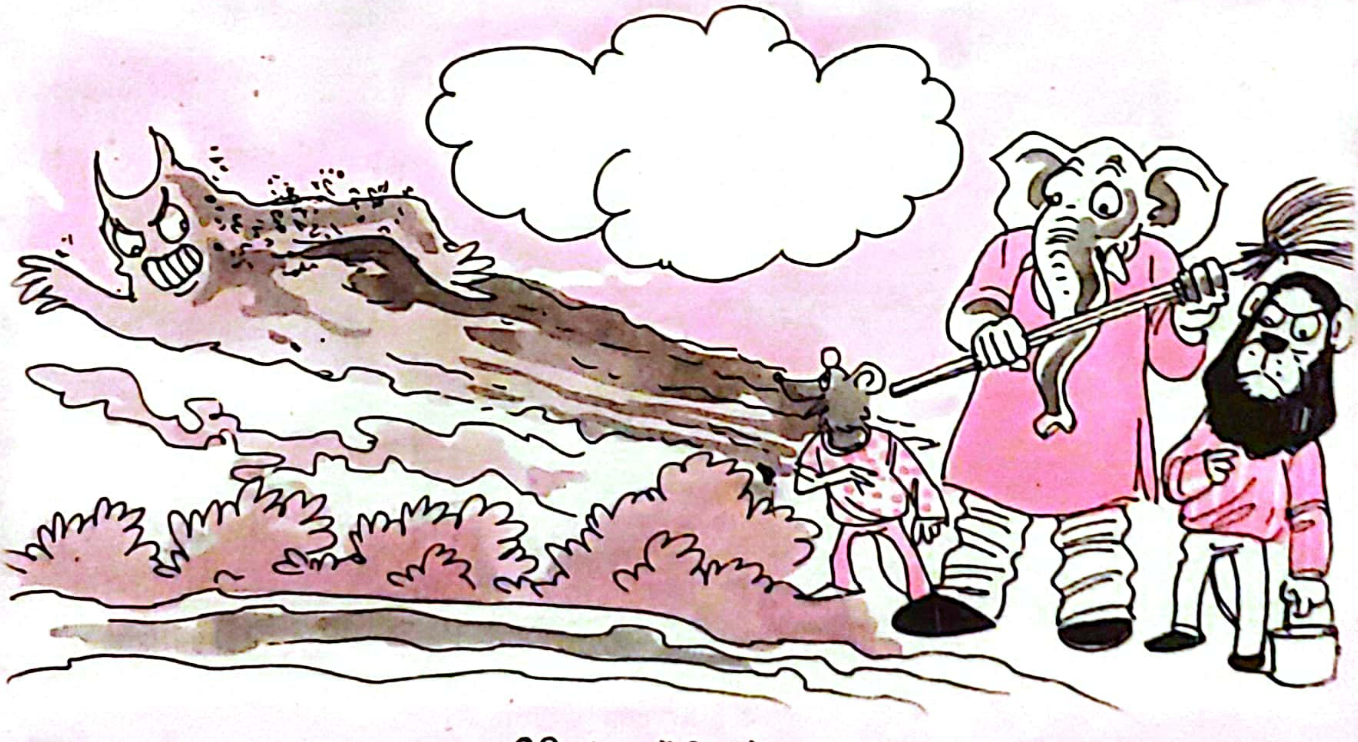

CamScanner

चिड़िया कैसे गाएगी

अगर प्रदूषण यूँ ही फैला
ऐसी मुश्किल आएगी,
पेड़ न होंगे, फूल न पत्ती
चिड़िया कैसे गाएगी?

अगर प्रदूषण यूँ ही फैला
ऐसी मुश्किल आएगी,
नदी न होगी, नाले होंगे
मछली भी मर जाएगी।

अगर प्रदूषण यूँ ही फैला
ऐसी मुश्किल आएगी,
हवा न होगी, धुआँ रहेगा
साँस-साँस घुट जाएगी।

अगर प्रदूषण यूँ ही फैला
ऐसी मुश्किल आएगी,
शांति न होगी, शोर मिलेगा
सब पर आफत छाएगी।

CamScanner

अगर प्रदूषण यूँ ही फैला
ऐसी मुश्किल आएगी,
सब रोगी होंगे, यह दुनिया
तब पागल हो जाएगी।

इसीलिए संकल्प हमारा
जिसको सदा निभाएँगे,
इस धरती को हम सब लोग
प्रदूषण-मुक्त बनाएँगे।

CamScanner

आँधी आई

भागो भाई, भागो भाई,
आँधी आई, आँधी आई!

गर्द भरी गलियाँ, चौरस्ते,
राही भूल गए हैं रस्ते।
फँसे बीच में हम सब बच्चे,
उड़ीं किताबें, लुढ़के बस्ते।

छज्जे पर जा अटकी टाई।
आँधी आई, आँधी आई!

इक्का लेकर भागा घोड़ा,
कोचवान को पीछे छोड़ा।
आसमान में उठे बगूले,
बिछड़ गया चिड़िया का जोड़ा।

धूल भरी बदली है छाई।
आँधी आई, आँधी आई!

भैंस तुड़ाकर भागी खूँटा,
ग्वाले का मटका भी फूटा।
छड़ी गिर पड़ी दादा जी की,
दादी जी का चश्मा टूटा।

कहीं न कुछ देता दिखलाई।
आँधी आई, आँधी आई!

CS CamScanner

रामदीन

पैरों में टूटी चप्पल है
और अँगोछा कंधे पर,
रामदीन निकला है घर से
सुबह-सबेरे धंधे पर।

शाम तलक दस-बीस रुपैया
मजदूरी से पाएगा,
बीवी-बच्चों संग मिल-जुलकर
रोटी-चटनी खाएगा।

जो सुख मिलता रामदीन को
मेहनत भरी मजूरी में,
कहाँ मजा वह बड़ों-बड़ों की
हलवा-सब्जी-पूरी में!

CamScanner

विकलांग बच्चों के गीत

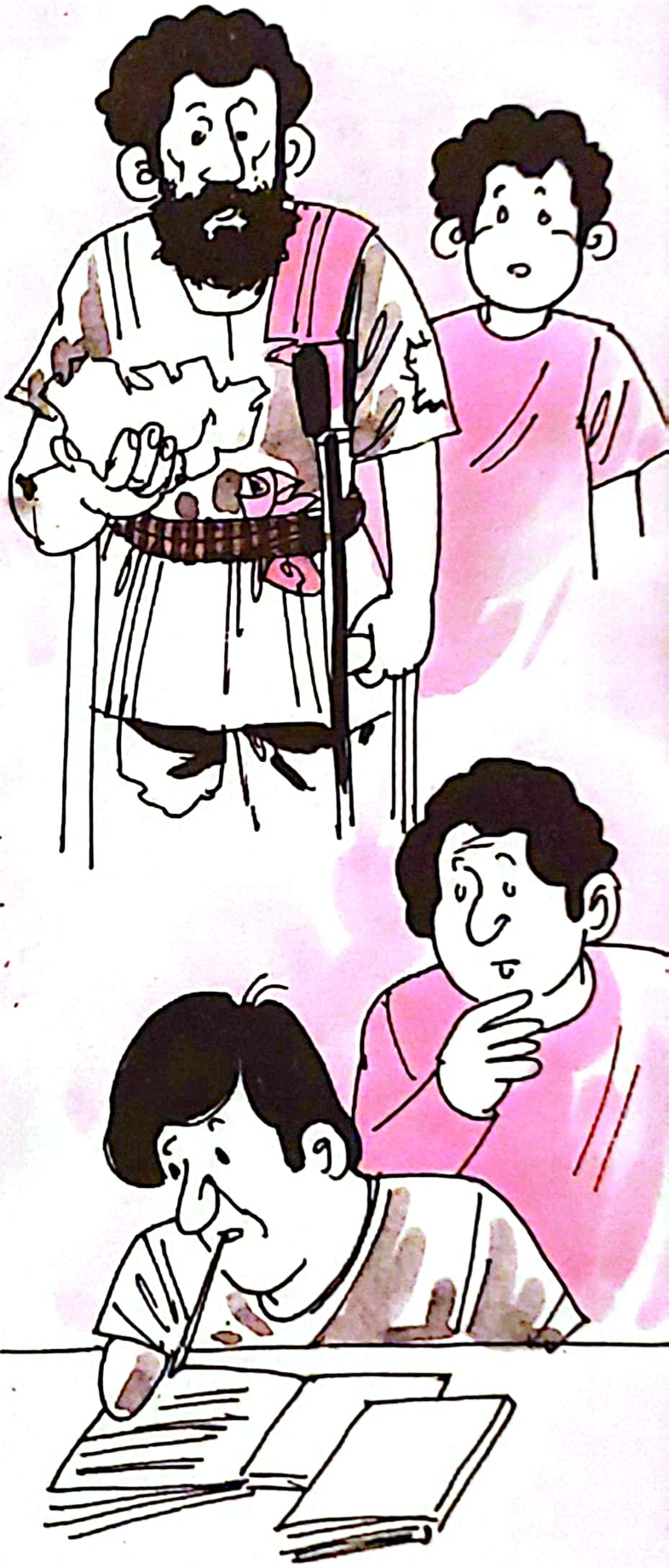

नई राह पर चलने वाले,
खुली हवा में पलने वाले,
अच्छे बच्चे हम! हम हैं किससे कम
बोलो, हम हैं किससे कम!

पाँव नहीं, लेकिन
अपने पैरों हम खड़े हुए,
हर मुश्किल आसान बनाकर
इतने बड़े हुए। आगे बढ़े कदम।
हम हैं किससे कम
बोलो, हम हैं किससे कम!

हाथ नहीं, पर
हम लिख सकते एक नई गाथा,
जिसके आगे बड़ों-बड़ों का
झुक जाए माथा। बाँहों में वह दम।
हम हैं किससे कम
बोलो, हम हैं किससे कम!

CamScanner

हमें कुरूप
समझने वालो, क्या यह नहीं पता,
मन की सुंदरता होती है
सच्ची सुंदरता। तोड़ें सभी भरम।
हम हैं किससे कम
बोलो, हम हैं किससे कम!

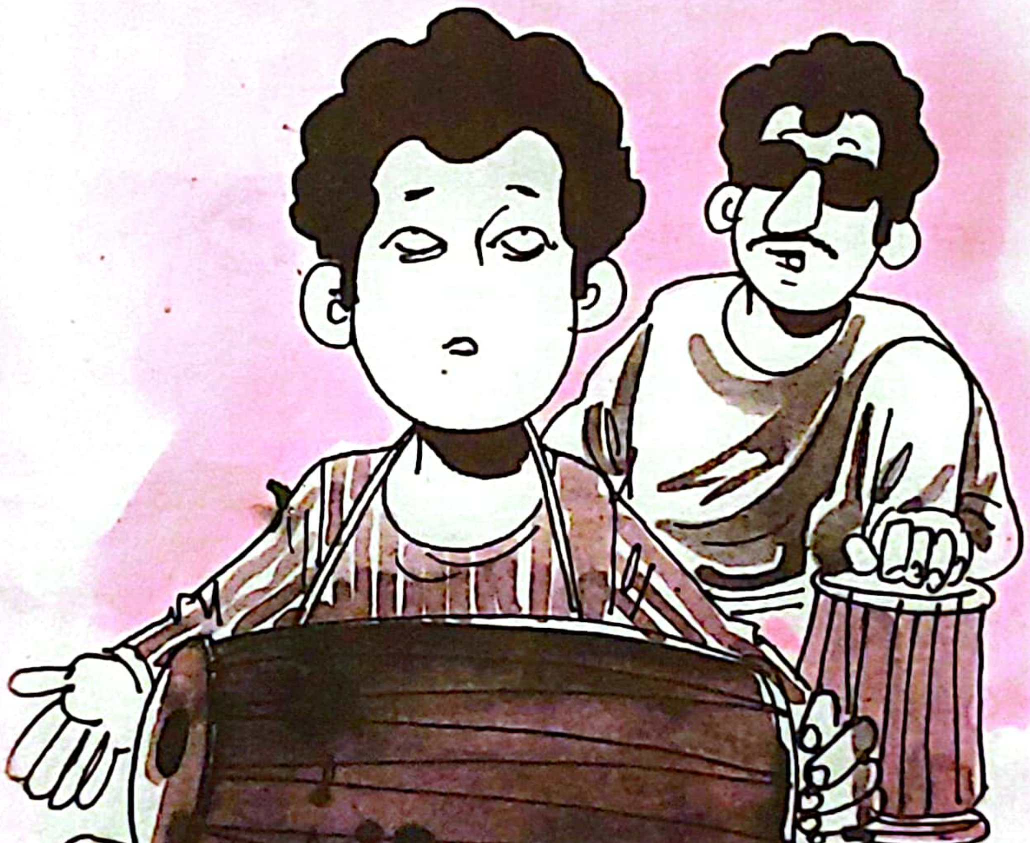

CamScanner

अपना देश

गरमी का मौसम ज़ब आए,
सूरज रंग-गुलाल लुटाए।
वर्षा में बादल पिचकारी—
बनकर हमें भिगोता जाए।
जाड़ों में कुहरे के उजले—
कपड़े लाता अपना देश।
हर मौसम में होली का
त्योहार मनाता अपना देश।

गंगा की लहरों-सा चंचल,
दृढ़ विंध्याचल-सा ठहरा।
तन हिमगिरि से भी ऊँचा है,
मन सागर से भी गहरा।
केसर की क्यारी-सा हर पल—
गंध लुटाता अपना देश।

कहीं डाँडिया, गरबा, गिद्‌धा,
कत्थक और भारत नाट्‌यम।
बिरहा कहीं, कहीं पर चैता,
कहीं मृदंग, ढोल ढम-ढम।

CamScanner

फागुन आते ही मस्ती में—
तान लगाता अपना देश।

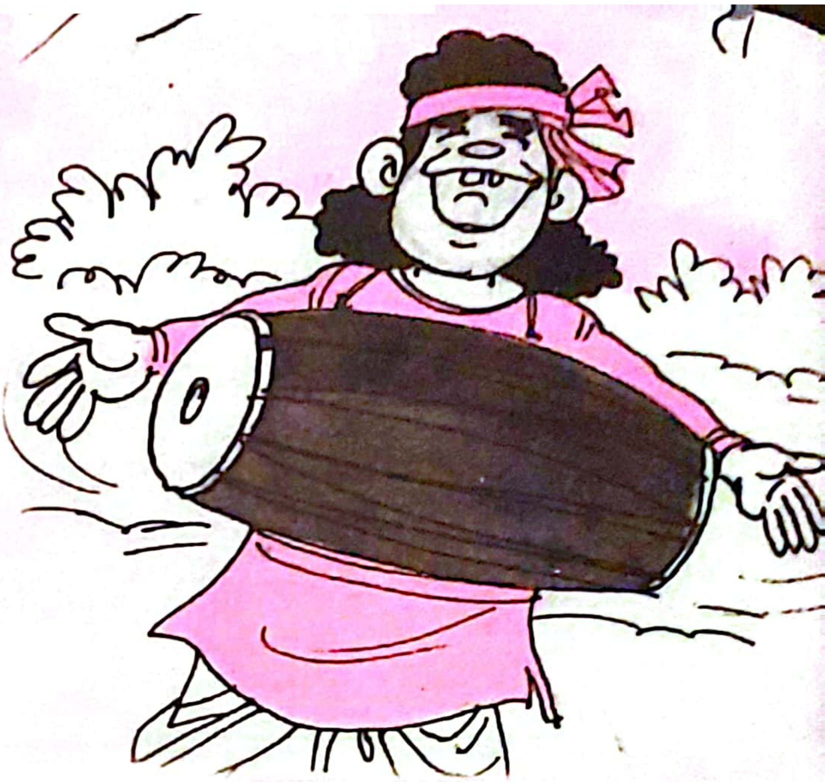

खेत और खलिहानों में,
हर पल इठलाता अपना देश।
कितना प्यारा, देश हमारा,
हँसता-गाता अपना देश।

CamScanner

हम उसको दोस्त बनाएँगे

हो जिसको प्यार किताबों से
जो अव्वल आए पढ़ने में,
जो सही राह दिखलाता हो
औरों को, आगे बढ़ने में।
हम उससे हाथ मिलाएँगे।
हम उसको दोस्त बनाएँगे।
जो खुश रहता हो उन्नति से
ईर्ष्या न कभी पाले मन में,
जो सुख में भी संग-संग रहे
और साथ निभाए मुश्किल में।
हम उस पर जान लुटाएँगे
हम उसको दोस्त बनाएँगे।
अच्छे लोगों की सोहबत हो
हो नहीं नशे की लत कोई,
झंझट-झगड़ों से दूर रहे
हो नहीं बुरी आदत कोई।
हम उसको ही अपनाएँगे।
हम उसको दोस्त बनाएँगे।
फालतू न हों खरचे जिसके
उँचा विचार, जीवन सादा,
जो सबको आदर देता हो
जो करे नहीं झूठा वादा।
हम उसका साथ निभाएँगे
हम उसको दोस्त बनाएँगे।

सूर्यकुमार पांडेय

जन्म : जनवरी, 1956। बलिया, उत्तर प्रदेश।

बाल कविता संकलन : गीत तुम्हारे (1977), चूहे राजा (1982), हम बच्चे (1982), फूल खिले (1985), बंदर जी की दुम (1987), मेरी प्रिय बाल कविताएँ (1988) गीत चुनमुने (1990), अक्कड़-बक्कड़ (2003)।

गीत संकलन : गीत मंजरी (1981)।

व्यंग्य कविता संकलन : चिकने घड़े (1993), वाह-वाह (1996), पेट में दाढ़ियाँ हैं (1999), रुकावट के लिए खेद है (2000), पांडे जी के पटाखे (2001), पांडे जी के ठहाके (2003)।

पुरस्कार एवं सम्मान : ❑ 1979-80 : 'गीत तुम्हारे' पुस्तक पर उ.प्र. हिंदी संस्थान, लखनऊ का पुरस्कार ❑ 1988 : उ.प्र. हिंदी संस्थान, लखनऊ का सूर पुरस्कार ❑ 1989 : महाकवि राष्ट्रीय आत्मा स्मारक समिति, कानपुर का पं. जगदीश सहाय अग्निहोत्री पुरस्कार ❑ 1991 : हिंदी-उर्दू साहित्य अवार्ड कमेटी, लखनऊ के तृतीय अंतर्राष्ट्रीय साहित्य उत्सव के अवसर पर उ.प्र. के राज्यपाल द्वारा सम्मान ❑ 1996 : माध्यम साहित्यिक संस्थान, लखनऊ का अट्टहास युवा रचनाकार सम्मान ❑ 1997 : हस्ताक्षर साहित्यिक संस्थान, कानपुर का श्रीमती चमेली देवी महेंद्र स्मृति सम्मान ❑ 1998 : अखिल भारतीय भोजपुरी परिषद, उ.प्र. के चतुर्थ अधिवेशन में 'भोजपुरी शिरोमणि' की उपाधि ❑ 1999 : काका हाथरसी पुरस्कार ट्रस्ट, हाथरस का काका हाथरसी पुरस्कार तथा हास्य-रत्न की उपाधि ❑ 1999 : बेधड़क बनारसी स्मृति साहित्य प्रोत्साहन सम्मान ❑ 2005 : भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ, उत्तर प्रदेश का गोपाल प्रसाद व्यास सम्मान ❑ 2005 : 'विदूषक' पत्रिका, जमशेदपुर का स्वतंत्रता सेनानी जगन्नाथ राय शर्मा स्मृति पुरस्कार। ❑ 2007 : केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार का भारतेंदु हरिश्चंद्र पुरस्कार।

विशेष : समाचार पत्रों में 1980 से निरंतर व्यंग्य स्तंभ लेखन। कृतित्व पर एम.फिल., पीएच.डी. की उपाधि। देश-विदेश के कवि-सम्मेलनों में प्रतिभागिता। आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के विभिन्न चैनलों से प्रसारण।

संप्रति : उत्तर प्रदेश सरकार के राज्य स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थान में अधिकारी।

पता : 538 क/514, त्रिवेणीनगर द्वितीय, लखनऊ-2260 20 (उ.प्र.)।

लेखकीय प्रति

CamScanner

ISBN 81-88911-41-0